

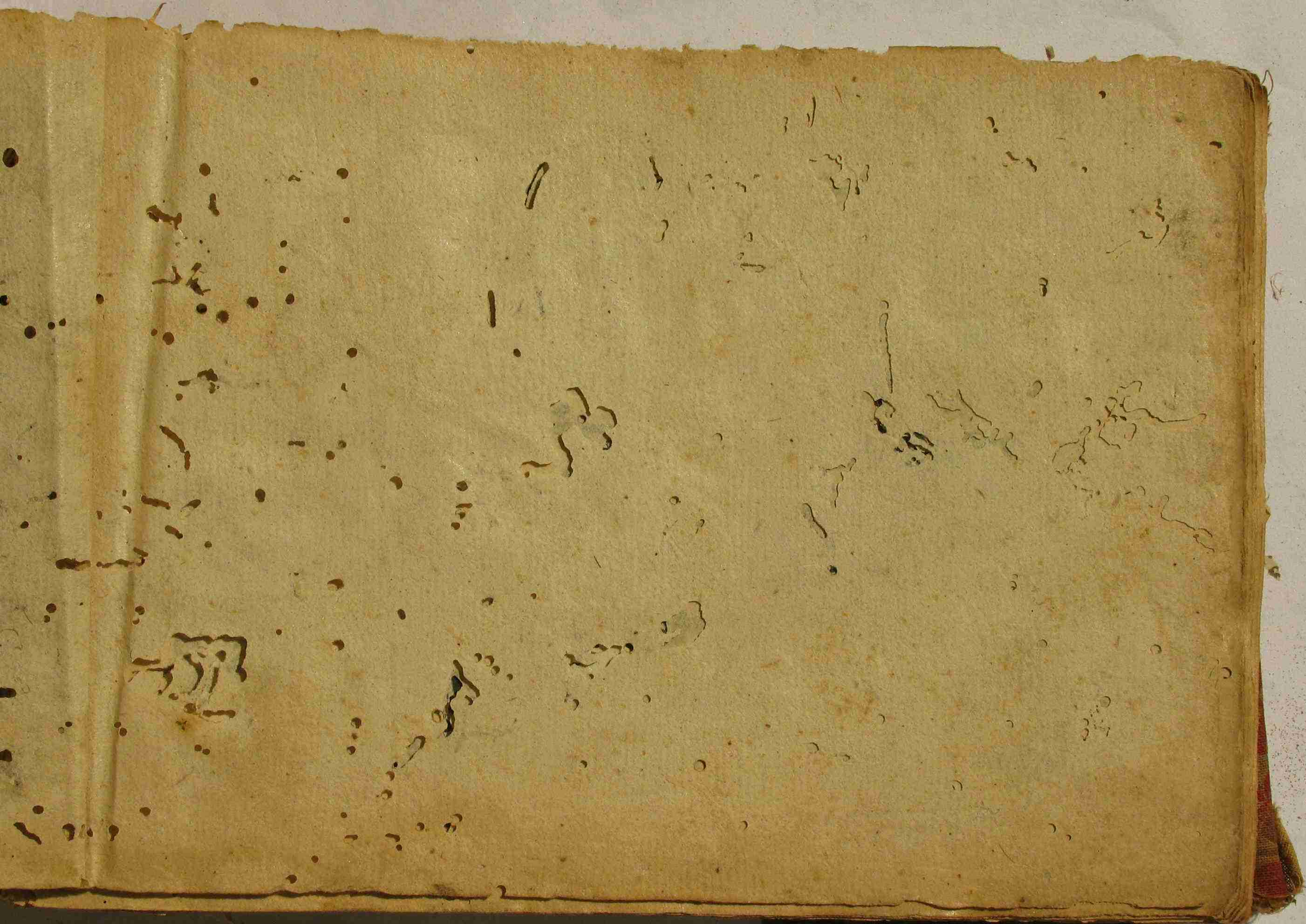


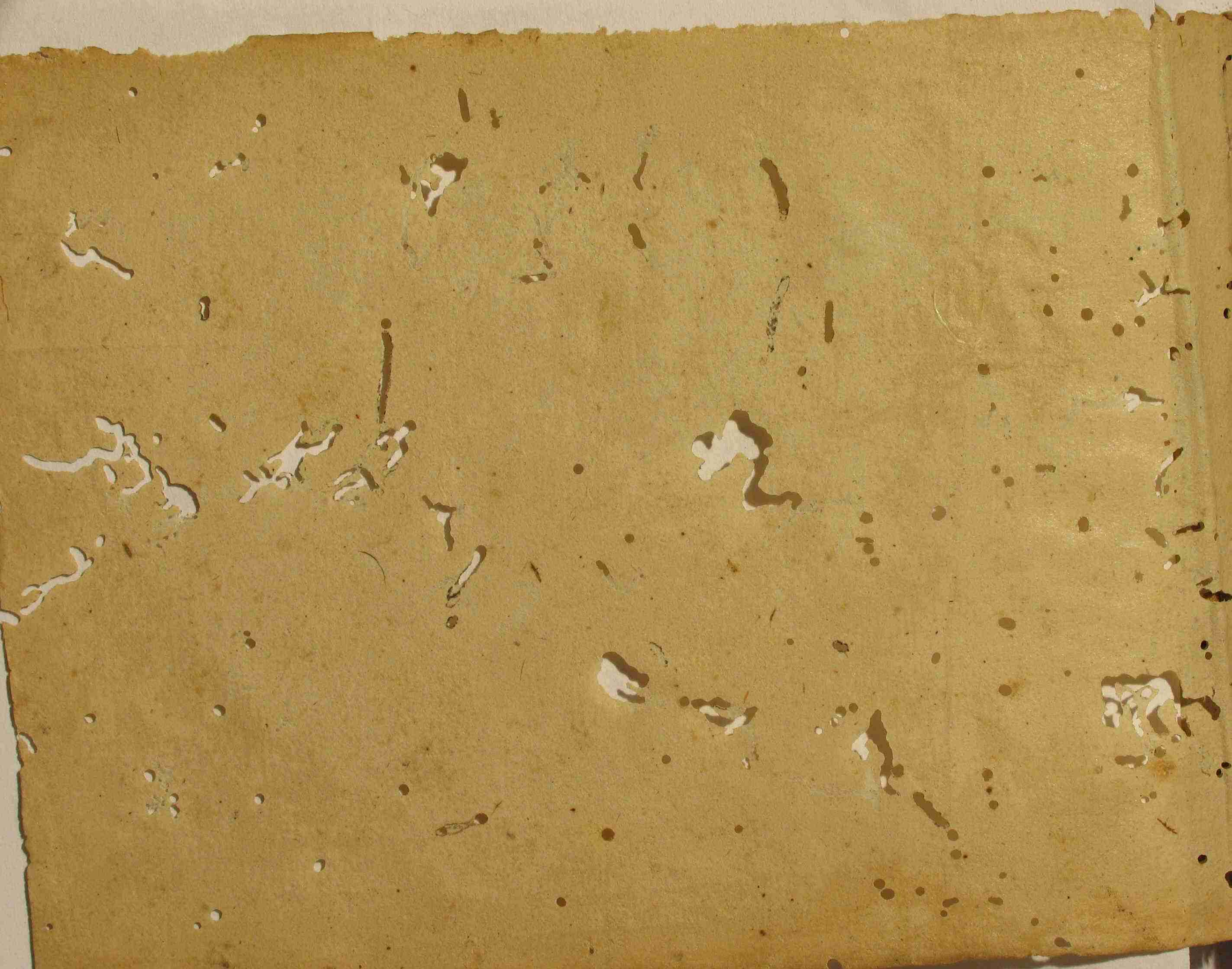


ਪੰਨਾ ੨੫੪

ਅਗਲੀ ਪੰਨਾ

52311-52315





[illegible]

ठगव विष्णुव रमं एगउं पतिः ॐ श्री ठगव उवम
 फउउक सयिधु मि भनैरिह भउ भुतिभ ॥ भगल्लयं
 भउ भुह प्रपेति पभं गतिभ ॥ १ विष्णु रभामिः
 ठगु भ भउ भुह म झन ॥ एक गूः प्रयउ उह चिभं
 भउ भुमी गयउ ॥ ठिन मे ठगव उव भुह वय अउउम
 सुउमेव भउउं प्रकषेउ भभ ॥ प्रपुह प्रल्लनि चिभु भभ
 उंपर भभु रभ ॥ ७ प्रगं प्रकषं विभु भनउं नैक भ
 क्रिभ ॥ प्रपुह प्रगु गीक भ भीमं ठउ उक भिउ भ
 नैक न संभद भू क भ कं पभं पभ ॥ ठगव उं प्रपु
 भिउ उ ठउ ठव हुभ ॥ ०० भुभं भच नैक न भन

उरलपेरुधभा पाज्ञाठंरुभीकैसंप्रपडेभरुभरु
 यभा ०३ निरहृगंरुगुरुभभउंविस्त्रेभापभा पूरु
 कुरुभनहृउंप्रपडेठश्रुहृतिभा भरुभूमिभंभंभं
 देउंठंरुवदभा प्रपडेभ्रकभमनंवरुहृभरु
 यधरुभा ०४ नगरंनगरिभंरुयेगइनंभनउन
 भा सरहंभचश्रुतंनंप्रपडेप्रवभीश्रुभा ०५
 प्रहृजश्रुजप्रहृवभहृजश्रुःपरःप्रहृः उभ्रहृगं
 नभ्रिउभभ्रिसरंनंभ्रः ० मित्रयउंरुयंनिहंरु
 र्भ्रभ्रभ्रयःप्रहृभा मित्रयंनयिगश्रुतिउभभ्रिसर
 नंभ्रः ०१ रिउंरुयभ्रहृनेहृनहृनपरय०७ः

यं प्रपुन निवतुते उभमिभमरं गतः ०३ यः प्रकुः भव
 कुत नं येन भवमिमं उत भु मर मर गुरुदेवः भवे वि
 शुः प्रभीमत् ०७ एकं मेन ए गुरुचं येव शुह भि उ
 विदुः अगुरु निनुः म भु उभमिभमरं गतः ३ य
 भद्रः भद्र श्रु पद्मे निः पिउ भद्रः प्रभीमत् भवे वि
 शुः पिउ भद्र पः प्रकुः ३० यः भद्र प्रनये प्रपुन शुनैकं म
 ग मर एक भि शुति येन इ भवे वि शुः प्रभीमत् ३३ प
 नतः पतिषी म भुं क भे पदः वि य फल भु गुण करः
 प्रकुगी मेव भुदेवः प्रभीमत् ३३ अयि भे भद्र कुत ग ७
 न मद्रु ये गिन भु अयि भुद भुत एं मि भवे वि शुः प्रभी

मउ मउरि सुमउरि सुसुहं पल्लिनेवम अयउमधन
 सुहं उमयल्लु हनेनमः ३५ दिवकरभुभे भुंफिभपुयं
 मदेवभित्तम। केरल्लुभिउयं पूजः मभनरु पूभीमउ
 मधयभिन्नमरु मउविस्लेयः मभनः उभित्तः पू
 कतिं कुडु मभनरु पूभीमउ ३७ केरल्लु पल्लणं कुडु
 पूकतिं वडुण गुलेः मनेगुं सुयेडुडु मभनरु पूभी
 मउ ३३ मल्लयेगै सुयेगइ म'पु सुव मभनरुयः व
 विमिडु विभुपुते मभनरु पूभीमउ ३७ मभीगठ
 सुयेगठ सुभुगठ सुयोयपः रिधगठ सुयेगठः मभेविधुः
 पूभीमउ ३० यभनरु मभनरु गनेउय सुव कनम। म

३० कः कः उल्लेख्य भुभमे विष्णुः प्रसीदतः ३० मउमुडिः प
 उण भलकी व भे मिग मिउः भव विव भन हे भिवा
 भुवे वन भे भुउ ३१ येग व भन भ भुहं भव व भव भ्र
 यल्लुग ह भन ठ ग पल्ल यल्ल न भे भुउ ३२ मउमुडि एग
 भु भलकी व भव भ्र भव व भन भ भुभ भि भि ह
 उल्लेख्य ३३ सुल्लेख्यः पण्डु पण्डु सुचि भुभ भि भि क
 भिः रिगुल्ले पल्ल कल यन भ भुल्ल न भ गन ३४ न भ
 भुभ च उठ भुभ च उठ भि भि भि भि भि भि भि भि भि भि
 भि भुउ ठ व भि भि ३५ सुती विष्णु न भ भुहं लिङ्ग भ भि भि
 यउ ये उहं न भि भि भि भि भि भि भि भि भि भि ३६ न भ भुभ

३१

सुमीक कथनवचनभेभुते संशुनेमि एगव सकिभतः
परभुष्टुते ३३ गगद्धेधविनिमुजेलेठभेदविवलिउः
सुमीरःसमीरभुःभभःभचेधुदेदिधु ३७ सुवज
पहुल्लुगभरुहतेविया ॥ ३८ डियतानिनउधइंउधइं
तानिडिय ॥ ३९ भुधुठेजभितुएभेग ॥ ४० भुडगीधुगः
धुल्लुहतेउगदिउःधुडग ॥ ४१ ववभितुः ॥ ४२ ठज नयेदि
मेवभुंइंणभभुनगेउभ ॥ ४३ भभेभुतेधुभयेगेनधुनठवए ॥
नी ४४ न'ल्लुग ॥ ४५ यिउषाभडुमिठिनु ॥ ४६ नणमे
नहणमेव नधनसुवएभनी ॥ ४७ विधयेविदियेसुवभभ
हुयउभगमः ॥ ४८ विवीयउमे ॥ ४९ यउमेवभनए

लभा ॥ २२ मशुद्धतामनंय उभजेमेय उभा रुता ॥
 मवे ह क म म म उ म म वे क रि कं भनः २५ सुदुष्ट
 व सुभे व डिं ड रि य डिः भ मे उ म वि ये गः म च क उ ॥ गु
 ने ड उ सु भे ठ वे उ ॥ २६ म डुं व म म म व भू नं ति भू वि म
 उ मे म के व ल थ मं मे वी भू य उ थ मं उ व २७ एक
 ठ वे डु वे व भु म म ए न रु ठ वे नः २८ मे रु ग व उ उ मे वि
 भू वि भू रु वि भू वे २९ इ म न भू म उ भू म भू रु ग भू द
 ग य मः इ भू वे उ भू ग रि म म न प ड पां भू उ ३०
 प्र चं मे दे रु उ ये मे ह य म भू वि म उ म म भू य उ म मः
 प वि णं मे भू उ भू म उ म ३१ वि न भू म उ मे ग ये म म

३
 ३३

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

भञ्जुवपियः भञ्जु ५१ सुपिपापमभमः भिप
 यतिपुंथमभ भञ्जुवपिमभुप्रेयमुमेभमभञ्जु
 भञ्जु यमदङ्गुभसिउयल्लुनउपः त्रियाः वचि
 नलभवप्रेतिधनगवउंयउः ५७ सुमयत्रिपियेमे
 वञ्जुवपिवलिंममग सुङ्गुमञ्जुवपिनठउप
 गभं गतिभ ७० यल्लमनंउपभुमङ्गुदममविवलि
 उः अलिभायभभायंमङ्गुमञ्जुवविमैधउः सुव
 यङ्गुङ्गुणनेहेयेमङ्गुभभुभासिउः नमउडेययेङ्गुय
 मङ्गुउः सुङ्गुयविउः ७३ उह मयमवेल्लकः सुभा
 कभुपिनरम किंभनदएउयेभं भापके विणि

प्रसक्तभा ७३ सुसुभेषमभक्षुं यः भक्षुं भक्षुं
अ नभो उदुलभभेति भक्षुं यमवधुय ७४ उक्षं
मउ उधेणी उं उत निनियभा सुय भवभेति न सायसु
नमाति त्रविहते ७५ उभक्षुं यभा प्रहः भवभक्षुं
यक्षुं गीभा कक्षुं मधुषी मक्षुं त्रउतुं कम म ७६
का उत उवन सुनेषु कक्षुं मधुय भभवे मधुतिः भविमक्षु
सुन भति मं प्रक्षुं उये ७७ एने गक्षुं उवगदः ७८
ने गक्षुं उवभनः सुदक्षुं न गभिमं भक्षुं भचतः प उके म
वः ७९ भक्षुं गितयन कति रिहक्षुं यभा वक्षुः
भक्ति कक्षुं भक्षुं यगभनं भति ८० उभक्षुं भवमेव मे

५२३।२
 प्रयश्च उच्यते फलिभा सुवप्रमिउतः मिद्धिं पंगु
 मि उच्यते १० न फंवभा मिवेज्जु ये गिनं हूमये नम
 भस्मज्ज यर गायति उरति शुभिनं गम १० वेसभद
 वाम एवं भमेवमेवे न न गमः धतिवेति उः मंक गकं सर्व
 ठिं उम्रुं जुरुपु १३ मंभा गवभी भवेयः शुभं
 किल कष्टं ननु प्रयति ये गेनी कषया भिम उच्यते ॥
 गचवत्रु विनिमुजः पंगु पमभा प्रयत्न १२ उचिमी भद
 ठा उमउ भदभुं भंदि उयं वै ममि हां विष्णु पदे उचं सु
 उम्रुति भप्रलभे ॥



